पाठ्यचर्या
व्यवसाय अध्ययन
(माध्यमिक पाठ्यक्रम)

1. तर्क संगत आधार

हम सभी बहुत बड़े तथा मिश्रित व्यवसायिक वातावरण में रहते हैं। हम चाहे गरीब हों अथवा धनवान हमारे चारों ओर के व्यवसायिक कार्यकलापों ने हमारे जीवन में आधारभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने के साथ-साथ हमारे जीवन स्तर का भी सुधार किया है। हम भूतकाल के व्यवसायों का पुनः अध्ययन कर सकते हैं तथा उनकी तुलना आज के व्यवसायों से भी कर सकते हैं। आज के व्यवसायिक कार्यकलाप तीव्र गति से बदल रहे हैं। इसका कारण वैज्ञानिक प्रगति और अच्छी तकनीकी सुविधाओं तथा ज्यादा अच्छे संचार साधनों का होना है। उत्पादन तथा वितरण के आधुनिक तरीकों ने व्यवसाय को विश्वव्यापी बाजार के स्तर तक पहुंचा दिया है। एक देश में तैयार की गई सेवाएं अथवा कोई उत्पाद आज दूसरे देशों में सुगमता से उपलब्ध हो जाते हैं। वैज्ञानिक प्रबन्धन, उच्च सूचना-संचार की तकनीकी, तत्काल वित्तीय सहायता का उपलब्ध होना तथा बीमा आदि ने व्यवसाय को जटिलता आदि से छुटकारा दिला दिया है। अत: अब समय की मांग है कि हम अपने व्यवसाय को आधुनिक बनाएं तथा प्रतिदिन जीवन को प्रभावित करने वाली बातों को ध्यान में रखे। व्यवसायिक अध्ययन का माध्यमिक स्तर पर ज्ञान हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होगा।

2. उद्देश्य

माधयमिक स्तर पर व्यवसायिक अध्ययन को पढ़ने पढ़ाने से निम्नलिखित का ज्ञान/जानकारी हो सकेगी :

i. व्यवसाय से सम्बंधित सामाजिक जिम्मदारियों को समझने तथा उसकी प्रकृति तथा उसके क्रियाकलापों के सम्बंध में जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

ii. औद्योगिक तथा वाणिज्य क्षेत्र में व्यावसायिक क्रियाकलापों के वर्गीकरण के सम्बंध में जानकारी तथा व्यवसाय संगठन के स्वरूप का निर्णय करना।

iii. व्यापार के विभिन्न सहायकों जैसे- भंडारण, परिवहन, संप्रेषण, डाक, बैंकिंग तथा बीमा आदि की आवश्यकता तथा महत्व की जानकारी हो सकेगी।

iv. व्यावसायिक जगत में हुए नए विकास जैसे- ई-बैंकिंग, बीपीओ, केपीओ आदि के बारे जानकारी होना।

v. विभिन्न प्रकार के फुटकर व्यापार तथा विभिन्न प्रकार के वितरण माध्यमों के सम्बंध में जानकारी होना।

vi. विज्ञापन, बिक्री संवर्धन तथा व्यक्तिगत बिक्री के सम्बंध में विचार विमर्श करना। उनके महत्व तथा आवश्यकता के सम्बंध में जानकारी।

vii उपभोक्ता की सुरक्षा, उसकी परेशानियां तथा उनके निवारण के सम्बंध में जानकारी।

vii स्व रोजगार तथा जीविका के सम्बंध में महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त करना तथा उसके महत्व को समझना।

ix. परियोजना कार्य को करने के लिये मामला अध्ययन (Case Study) विधि के प्रयोग द्वारा उनकी बुद्धि व ज्ञान का विकास करना।

3. विषय संरचना

व्यवसाय अध्ययन सिलेबस/पाठ्क्रम को 7 भागों में विभाजित किया जाता है :

विषय	शीर्षक	अंक	समय
1.	व्यवसाय का परिचय	12	25
2.	व्यवसायिक संगठनों के प्रकार	15	35
3.	सेवा क्षेत्र	25	45
4.	क्रय-विक्रय तथा वितरण	20	45
5.	उपभोक्ता जागरूकता	16	35
6.	व्यापार में जीविकोपार्जन के अवसर	12	25
7.	प्रयोगात्मक/परियोजना (प्रोजेक्ट) कार्य	00	30
	योग	**100**	**240**

4. मूल्यांकन

इस विषय के मूल्यांकन के तरीके/नियम में अध्यापक द्वारा दिये गये आन्तरिक अंकों (TMA) तथा बाह्य परीक्षा में दिये गये अंको (प्रयोगात्मक परीक्षा सहित) का समावेश होगा। अंतिम अथवा बाह्य परीक्षा, वर्ष में दो बार होगी यथा अप्रैल तथा अक्टूबर माह में। टी.एम.ए. को प्रारम्भिक ज्ञान के रूप में समझा जायेगा। यह सीखने वालों को उनकी प्रगति की जानकारी देने तथा परीक्षा की तैयारी में सहायक होगी। टी.एम.ए. के अंकों को अंक पत्र में अलग से दर्शाया जायेगा और सार्वजनिक परीक्षा में पूर्ण रूप से/अंतिम रूप से ग्रेडिंग करने के लिये नहीं माना जायेगा।

प्रोजेक्ट कार्य अध्ययनकर्ताओं को व्यापारिक गतिविधियों की वास्तविक/व्यवहारिक जानकारी देगा। उपर्लिखित मूल्यांकन दोनों विधियों के अतिरिक्त स्वयं मूल्यांकन के लिये कुछ स्वयंभू घटक जैसे पाठगत प्रश्न तथा सामाजिक अभ्यास आदि भी प्रत्येक पाठ में यथा सम्भव सम्मिलित किये जाने चाहिएँ।

5. पाठ्य का विवरण

5.1 व्यवसाय परिचय — 12 अंक — 25 घण्टे

हम व्यापारिक वातावरण में रहते हैं। यह समाज का एक आवश्यक हिस्सा है। यह हमारी आवश्यकताओं और इच्छाओं को विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं के द्वारा जो कि विस्तार से व्यापार के रूप में फैला हुआ है, के द्वारा संतुष्ट करता है। यह पाठ्यक्रम इस प्रकार से तैयार किया गया है कि अध्ययनकर्ता व्यापार के संसार को समझ सके तथा उसकी महत्ता, उसके उद्देश्य को समझ सके तथा उसमें होने वाले नये-नये परिवर्तनों की जानकारी कर सके तथा साथ-साथ यह भी जान सके कि शेयर धारकों तथा व्यवसायियों की क्या-क्या जिम्मेदारियां हैं।

5.1.1 व्यवसाय परिचय

- व्यवसाय की प्रकृति तथा क्षेत्र
- मानवीय क्रियाकलाप : आर्थिक तथा अनार्थिक (वित्तहीन) कार्यकलाप
- आर्थिक कार्यकलाप : व्यापार, व्यवसाय तथा रोजगार
- व्यापार : अर्थ, विशेषताएं, मूल्यांकन तथा उद्देश्य- आर्थिक, समाजिक, मानवीय, राष्ट्रीय तथा विश्वस्तरीय
- व्यवसाय की सामाजिक जिम्मेदारियां, उद्देश्य, विभिन्न समूहों के प्रति जिम्मेदारियां

5.1.2 उद्योग तथा वाणिज्य

- व्यवसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण : उद्योग तथा वाणिज्य
- उद्योग तथा उसके प्रकार
- कॉमर्स (वाणिज्य) : व्यापार तथा उसके सहायक
- ई-वाणिज्य : अर्थ तथा लाभ

5.2 व्यवसायिक संगठन के स्वरूप — 15 अंक — 35 घण्टे

आकार, स्वामित्व तथा प्रबन्धन की आवश्यकतानुसार व्यवसायिक इकाइयों तथा संगठनों को परिभाषित किया गया है। इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् अध्ययनकर्ता व्यवसाय की संरचनाओं को विभिन्न प्रकार के संगठनों जैसे एकल स्वामित्व, साझेदारी, हिन्दू अविभाजित परिवार तथा संयुक्त पूँजी कम्पनी आदि में विभाजित कर सकता है।

5.2.1 एकल स्वामित्व, साझेदारी तथा हिन्दू अविभाजित परिवार

- एकल स्वामित्व : अर्थ, विशेषताएं, लाभ तथा हानियां
- साझेदारी : अर्थ, विशेषताएं, लाभ-हानियां, साझेदारों का असीमित दायित्व, विषय वस्तु
- अविभाजित हिन्दू परिवार : अर्थ, विशेषताएं, लाभ, हानियां।

5.2.2 सहकारी समिति - अर्थ, सहकारी समितियों के प्रकार

- सहकारी समिति : अर्थ, सहकारी समितियों के प्रकार
- विशेषताएं : लाभ तथा हानियां
- संयुक्त पूँजी कम्पनी : अर्थ, विशेषताएं, प्रकार- सार्वजनिक कम्पनी, निजी कम्पनी, सरकारी कम्पनी, बहुराष्ट्रीय कम्पनी

5.3 सर्विस सैक्टर (सेवा क्षेत्र) — 25 अंक — 45 घण्टे

आज व्यवसाय मिश्रित एवं जटिल हो गया है। व्यापार की सफलता, विस्तृत रूप से विभिन्न सेवाओं जैसे- परिवहन, गोदामों, संचार, डाक, बैंकिग, बीमा तथा बी.पी.ओ. आदि की उपलब्धता पर निर्भर करती है। यह दूरसंचार में प्रभावी रूप से व्यापार करने तथा उसकी प्रगति को प्रभावित करता है।

इस प्रकार से इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य उन सेवाओं में होने वाले क्रियाकलापों तथा विस्तार पर विचार करना है।

5.3.1 परिवहन सेवाएँ

- परिवहन : अर्थ, महत्व
- परिवहन के साधन - रेल, सड़क, समुद्र, हवाई; यातायात - विशेषताएं तथा कमियां।

5.3.2 भंडारण सेवाएं

- भंडारण का अर्थ तथा आवश्यकता
- भंडारगृहों के विभिन्न प्रकार
- एक आदर्श भंडारगृह की विशेषताएं
- भंडारगृह के कार्य
- भंडारगृह के लाभ

5.3.3 संप्रेषण सेवाएं

- संप्रेषण के अर्थ एवं महत्व
- संप्रेषण के प्रकार - मौखिक तथा अमौखिक
- संप्रेषण के साधन - पत्र, दूरभाष, टेलीग्राफ, टेलीप्रिन्टर, टेलीकान्फ्रेसिंग, फैक्स, इंटरनेट
- संप्रेषण में बाधाएं

5.3.4 डाक एवं कोरियर सेवाएं

- डाक सेवा का अर्थ एवं प्रकृति
- डाकघर द्वारा प्रदत्त सेवाएं
- विशिष्ट डाक सेवाएं
- डाक सेवाओं के लिए डाक टिकट/डाक खर्च

- डाक सेवाओं का महत्व
- निजी कोरियर सेवा

5.3.5 बैंक सेवाएं

- बैंक का अर्थ तथा भूमिका
- बैंकों के प्रकार
- वाणिज्यिक बैंकों के कार्य
- केन्द्रीय बैंक
- बैंक जमा खाते – प्रकार
- बचत खात खोलना, तथा संचालन करना
- ई–बैंकिंग

5.3.6 बीमा

- व्यवसायिक जोखिम
- बीमे का उद्देश्य तथा महत्व
- बीमे का प्रकार – जीवन, साधारण, अग्नि, समुद्री तथा अन्य तरह के बीमे
- बीमा के सिद्धान्त

5.3.7 बाह्यस्रोतीकरण (बाह्य साधान)

- बी.पी.ओ. – अर्थ एवं महत्व
- के.पी.ओ – अर्थ एवं महत्व

5.4 क्रय, विक्रय तथा वितरण — 20 अंक — 45 घण्टे

आज के व्यवसाय के संसार में अत्यधिक मात्रा में उत्पादन के होने से विक्रय और वितरण को बाजार में प्रभावी तरीकों से करने की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है। आधुनिक तकनीक ने विक्रय और वितरण में नई–नई विधियों के द्वारा क्रान्तिकारी रूप से व्यापार के संसार में बदलाव ला दिया है।

आज एक देश में किसी वस्तु के उत्पादन तथा सेवाएं दूसरे देशों में सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं। यह पाठ्यक्रम इस बात को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है कि अध्ययनकर्ता तथा माल के क्रय–विक्रय तथा वितरण तथा सेवाओं के सम्बंध में विभिन्न तौरतरीकों/विधियों आदि का प्रयोग करते हुए विज्ञापन आदि को समझते हुए विक्रय की उन्नति कर सके।

5.4.1 क्रय तथा विक्रय

- क्रय तथा विक्रय की अवधारणा
- प्रकार : नकद, उधार
- क्रय तथा विक्रय में प्रयोग होने वाले प्रपत्र – निर्ख, आदेश, बीजक, कैश मेमो, चालान
- भुगतान के प्रकार – नकद भुगतान, आस्थगित भुगतान योजना, उधार की समय सीमा समाप्त होने पर भुगतान

5.4.2 वितरण के माध्यम

- वितरण के माध्यमों की अवधारणा
- प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष वितरण के माध्यम
- थोक तथा फुटकर विक्रेता का वितरण में योगदान

5.4.3 खुदरा व्यापार

- फुटकर व्यापार के प्रकार – छोटे पैमाने पर तथा बड़े पैमाने पर
- बड़े पैमाने तथा छोटे पैमाने के व्यापार के प्रकार – विभागीय भंडार, सुपर बाजार, बहुउद्देशीय दुकानें, मॉल, बाजार

- भंडार रहित फुटकर व्यापार – डाक आदेश व्यापार, टेली शापिंग, स्वचालित विक्रय मशीन, इन्टरनैट के द्वारा विक्रय

5.4.4 विज्ञापन

- विज्ञापन, अर्थ तथा महत्व
- विज्ञापन के माध्यम

5.4.5 विक्रय संवर्धन

- विक्रय संवर्धन – अर्थ तथा महत्व
- विक्रय संवर्धन के साधन
- व्यक्तिगत विक्रय – अर्थ तथा महत्व
- एक अच्छे विक्रेता के गुण

5.5 उपभोक्ता जागरूकता 16 अंक 35 घण्टे

प्रत्येक व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ता की संतुष्टि होना चाहिए। तथापि अलग–अलग व्यवहार के उपभोक्ता को व्यवसायी द्वारा अलग–अलग तरह से प्राय: धोखा दिया जाता है। कभी कम गुणवत्ता वाला सामान अधिक मूल्य लेकर बेच दिया जाता है। यह प्राय:, अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति कम जानकारी होने के कारण होता है। इस विषय में इस पाठ्यक्रम को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि अध्ययनकर्ताओं को अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों आदि का ज्ञान हो सके तथा कानून के विभिन्न पहलुओं के अंतर्गत अपने संरक्षण की जानकारी प्राप्त कर सकें।

5.5.1 उपभोक्ता

- उपभोक्ता का अर्थ
- उपभोक्ता के अधिकार
- उपभोक्ताओं के कर्तव्य

5.5.2 उपभोक्ता संरक्षण

- अर्थ एवं आवश्यकता
- उपभोक्ता द्वारा समस्याओं का सामना
- उपभोक्ता संरक्षण में पक्ष
- उपभोक्ताओं को कानूनी सुरक्षा
- उपभोक्ता अदालतें तथा उपलब्ध उपचार

5.6 व्यवसाय में जीविकोपार्जन 12 अंक 25 घण्टे

हम में से प्रत्येक को किसी न किसी स्तर पर अपने जीविकोपार्जन के लिये कोई न कोई व्यवसाय चुनना पड़ता है। यह हमारे जीवन का महत्वपूर्ण पहलू है। व्यवसाय स्वरोजगार और सवेतन रोजगार के क्षेत्र में अनेक अवसर प्रदान करता है। आज स्वरोजगार बेरोजगारी की समस्या का महत्वपूर्ण हल है। यह हमारे देश की उन्नति में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। किसी का स्वयं कार्य करना, एक चुनौती तथा स्वयं में प्रसन्नता है। इसी विचार धारा को ध्यान में रखते हुए वर्तमान विषय वस्तु को विभिन्न जीविकोपार्जन के अवसरों के अनुसार बनाया/तैयार किया गया है। जिससे कि विद्यार्थी अपने कार्यक्षेत्रों में सफलता एवं कुशलता से कार्य कर सकें।

5.6.1 जीविकोपार्जन का चुनाव

- जीविकोपार्जन का महत्व एवं धारणा
- व्यापार में जीविकोपार्जन के विचार/अवसर
- स्वरोजगार का महत्व
- जीविकोपार्जन को पाने के लिये आवश्कताएं

5.6.2 उद्यमिता

- अर्थ तथा महत्व
- एक सफल उद्यमी की योग्यताएं
- एक उद्यमी के कार्य
- एक लघु व्यवसायिक इकाई को चलाना

5.7 प्रयोगात्मक/परियोजना कार्य

5.7.1 व्यवसाय अध्ययन के सम्बन्ध में प्रयोगात्मक जागरूकता

सीखने वाले/विद्यार्थियों को कार्यक्षेत्र में गहनता से अध्ययन करने की आवश्यकता है। चाहे स्वरोजगार हो या सवेतन रोजगार हो। कार्य क्षेत्र में सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उन्होंने दिये गये कार्य को कितनी बुद्धिमानी व लगन से किया है। यह पाठ्यक्रम इसी बात को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है कि अध्ययनकर्ता अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए दिये गये कार्य को मामला अध्ययन (Case Study) विधि से करें।

यह आशा की जाती है कि परियोजना कार्य विद्यार्थियों में बुद्धि का विकास करने तथा व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं को विकसित करने तथा उनके जीवन को संवारने में योगदान करेगा।